विनती–राग धनाश्री

हवे विनती एक कहूं मारा वाला, सुणो पिउजी वात।
प्रगट तमे पधारिया, आकार फेरो छो नाथ।। १ ।।

अब एक विनती मैं करती हूं, मेरे धनी! मेरी बात को सुनो। आप आकार बदल कर फिर से पधारे हैं।

श्री देवचन्दजी अम कारणे, रुदे तमारे आवया।
वचन पालवा आपणा, साथ सकल पर कीधी दया।। २ ।।

श्री देवचन्द्रजी ने हमारे लिए जो वचन कहे थे कि अपने तन के बाद तुम्हारे हृदय में आऊंगा, वही वचन उन्होंने पूरे किए (मेरे हृदय में आ पधारे हैं)। उन्होंने सुन्दरसाथ पर यह कृपा की है।

जनम अंध अमे जे हतां, ते तां तमे देखीतां करया।
वांसो वछूटो हाथथी, जमपुरी जातां वली कर ग्रह्या।। ३ ।।

हे धनी! अज्ञानी थे तो आपने जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर हमारी अज्ञानता को (अनजानपने को) हटाया। हमने आपका पीछा छोड़ दिया था। दूसरे जीवों की तरह गादी पूजा और कर्म काण्ड जो यमपुरी जाने का ही साधन है, उसमें भटक गए थे। तब आपने अति कृपा कर हाथ पकड़ कर खींच लिया (और अपने चरणों में लगा लिया)।

हवे अम मांहें अमपणूं, जो कांई होसे लगार।
तो निद्रा उडाडी तमे निध दीधी, हवे नहीं मूकूं निरधार।। ४ ।।

यदि अब हमारे अन्दर थोड़ा भी अहंकार है, तो आपने हमारे इस अहं को हटाकर जो अखण्ड ज्ञान दिया है, उसे मैं अब नहीं छोड़ूंगी।

आगे तो अमे नव ओलख्या, ते साले छे मन।
चरचा ते करी करी प्रीछव्या, अने कह्या ते विविध वचन।। ५ ।।

मैं आपको पहले नहीं पहचान सकी, यह बात मन में चुभती है (खटकती है)। आपने तो हमें तरह तरह के वचनों से चर्चा में समझाया था।

चाल

एहेवा अनेक वचन कह्या अमने, जेणे एक वचने ओलखूं तमने।
पेरे पेरे करीने प्रीछव्या सही, अमे निरोध तोहे उडाड्यो नहीं।। ६ ।।

ऐसे अनेक वचनों से आपने हमको समझाया, जिनमें से एक वचन से ही मैं आपकी पहचान कर लेती। आपने तो तरह-तरह से समझाया, तो भी मेरे मन का भ्रम (संशय) नहीं मिटा।

त्यारे हंसी वढी आंसूवाली ने कह्यूं, पण एणे समे अमे कांई नव लह्यूं।
त्यारे तारतम कही घर देखाड्या सही, पण अमे तोहे ओलख्या नहीं।। ७ ।।

तब आपने हंसकर, लड़कर, रोकर भी कहा, पर उसका मेरे पर कुछ असर नहीं हुआ। तब आपने जागृत बुद्धि के ज्ञान से घर की पहचान कराई, परन्तु फिर भी मैंने नहीं पहचाना।

Nijanand App

त्यारे अम मांहेंथी अद्रष्ट थया, मूल वचन रुदयामां रह्या।
एणे समे जो खबर न लेवाय, तो दुस्तर अमने घणूं दोहेलूं थाय।। ८ ।।

इस कारण से हमें आप छोड़कर चले गए। अब उन्हीं वचनों को लेकर आप मेरे हृदय में आ विराजे हो। यदि इस समय आप हमारी खबर न लेते (कहे वचनों के अनुसार मेरे हृदय में न विराजते) तो यह कठिन माया और भी दुःखदायी हो जाती।

एम जाणी ने आव्या अम मांहें, आवी बेठा प्रगट्या तम जांहें।
आपण जेम पेहेलां वृजमां हतां, नित प्रते वालाजीसूं रंगे रमतां।। ९ ।।

ऐसा जानकर आप मेरे हृदय में प्रकट होकर बैठे हैं। जैसे ब्रज में नित्य ही वालाजी के साथ में आनन्द की लीला करते थे, वैसी ही करने लगे।

अनेक रामत कीधी आपणे, पूरण मनोरथ कीधां समे तेणे।
अग्यारे वरसनी लीला करी, कालमाया तिहांज परहरी।। १० ।।

ब्रज में अनेक खेल खेले और जो इच्छाएं कीं, आपने तुरन्त उसी समय पूरी कीं। ऐसी लीला हमने ग्यारह वर्ष तक की। फिर कालमाया के ब्रह्माण्ड को वहीं छोड़ दिया।

जोगमायामां आपण रासज रम्या, तेतां साथ सकलने घणूं घणूं गम्या।
वचन संभारवाने अद्रष्ट थया, त्यारे अमे विरह कीधां जुजवा।। ११ ।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड में हमने रास खेली जो सुन्दरसाथ को बहुत अच्छी लगी। इन वचनों को याद दिलाने के लिए अन्तर्ध्यान की लीला की, जिसमें हमने विरह अलग से किया।

ते देखीने आव्या जेम, वली आंहीं प्रगट थया छो तेम।
धणी ज्यारे धणवट करे, त्यारे मन चितव्या कारज सरे।। १२ ।।

उस समय रास में हमारे विरह के दुःख को देखकर आप फिर से प्रकट हुए थे। उसी तरह अब हमें दुःखी देखकर फिर से प्रकट हुए हो। धनी जब अपना धनीपना (अपनत्व) निभाते हैं तो मनचाहे सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

तेणे समे धाख रहीती जेह, हमणां पूरण कीधी तेह।
हवे वालाजी कहूं ते सुणो, अने अति घणो दोष छे अमतणो।। १३ ।।

उस समय जो हमारी चाहना बाकी रह गई थी, अब उसे आकर आपने पूरा किया है। हे वालाजी! मैं अब जो कहती हूं वह सुनो। हमारा गुनाह बहुत बड़ा है।

तमारा मनमां न आवे लेस, पण साख पूरे मारूं मनडूं वसेख।
वारी फरी नाखूं मारी देह, तमे कीधां मोसूं अधिक सनेह।। १४ ।।

तुम्हारे मन में इनका थोड़ा भी असर नहीं होता। ऐसा हमारा मन विशेषकर गवाही देता है। आपने मुझे अधिक प्यार दिया है, इसलिए मैं फिर से अपने तन को समर्पित करती हूं।

वार वार हूं घोली घोली जाऊं, एक वचन तणां नव ओसीकल थाऊं।
ओसीकल वचन तो ते केहेवाए, जो अमे बेठा मोहजल मांहें।। १५ ।।

बार-बार मैं आप पर बलिहारी जाती हूं। आपके हर एक वचन का बदला नहीं चुका सकती। बदला चुकाने की बात तो कही है, क्योंकि मैं माया में बैठी हूं।

Nijanand App

अनेक वार जाऊं वारणे, तमे जे कीधूं ते आपोपणे।
भामणा उपर लऊं भामणा, पण दोष साले जे में कीधां घणा।। १६ ।।

आपने जो अपनापन (अपनत्व) दिखाया है, उसके लिए मैं बार-बार बलिहारी जाती हूं। मैं तो आप पर न्योछावर हुई जाती हूं, किन्तु हमारी भूलें हमें चुभती हैं।

हवे ए दोष केम छूटीस हो नाथ, सांचूं कहूं मारा धामना साथ।
तमे साथ मांहें देओ छो उपमां, पण हूं केम छूटीस ए वज्रलेपणा।। १७ ।।

हे मेरे धनी! मैं इस गलती से कैसे छूट सकूंगी? मैं अपने परमधाम के सुन्दरसाथ को सत्य कहती हूं आप मुझे सुन्दरसाथ के बीच में अपने जैसी उपमा देते हो। यह मेरे लिए वज्रलेप है। इस दोष से मैं कैसे छूट सकूंगी?

तमे गुण कीधां मोसूं घणां घणां, पण अलेखे अवगुण अमतणा।
तमे गुण करो छो ते ओलखी करी, पण मोहजल लेहेर मूने फरी वली।। १८ ।।

हे धनी! आपने मुझ पर बड़ी-बड़ी कृपाएं कीं, किन्तु मेरे अवगुण बेशुमार हैं। आप सब अवगुण देखते हुए भी कृपा ही करते हो, किन्तु मुझे भवसागर की (माया की) लहरों ने घेर रखा है।

हवे हूं बलिहारी जाऊं मारा धणी, मारा मनमां एक हाम छे घणी।
अछतां मंडल मांहें लाभ छे घणो, अने आंझो छे मारा धणीजी तम तणो।। १९ ।।

हे धनी! मैं आप पर बलिहारी जाती हूं। मेरे मन में एक बड़ी चाहना है। इस झूठे संसार में सबसे बड़े लाभ की यह बात है कि मैं आपका ही सहारा लेकर खड़ी हूं।

जे मनोरथ कीधां श्री धाम मांहें, ते द्रढ सघला आहीं थाए।
जे पेर सघली कही छे तमे, ते द्रढ कीधी सर्वे जोईए अमे।। २० ।।

मैंने परमधाम में जो चाहना की थी, वह सब यहीं पूरी होती हैं। आपने जिस तरह से समझाया। हमें उसी तरह से मन में दृढ़ता के साथ लेनी चाहिए।

श्री धामना सुख जे दीसे आहें, ते जीव जाणे मनज मांहें।
आ देहनी जिभ्या केणी पेरे कहे, वचन कहूं ते ओरूं रहे।। २१ ।।

श्री परमधाम के सुख जो यहां दिखते हैं, उनका अनुभव मेरा जीव मन में करता है। इस देह की जुबान से यदि कहें तो यहीं रह जाता है, अर्थात् कहने में नहीं आता।

ए सोभा सब्दातीत छे घणी, अने सब्द मांहें जिभ्या आपणी।
ए सुख विलसी निरदोष थाऊं, तम दयाए फेरो सुफल करी जाऊं।। २२ ।।

यह शोभा शब्दों से परे बेहद की है और अपनी जुबान शब्द के अन्दर (हद की) है। इस सुख और आनन्द का वर्णन कर मैं निर्दोष हो जाऊं तो आपकी कृपा से यह फेरा सफल हो जाए।

एटले मनोरथ पूरण थया, जे थाय ते वालाजीनी दया।
दयानो तो कहूं छूं घणूं, जे करी न सकी वस आपोपणूं।। २३ ।।

इसलिए हमारी समस्त चाहनाएं पूर्ण हो गईं और मैंने समझ लिया कि यहां जो कुछ भी होता है, वह धनी की मेहर से ही होता है। धनी की मेहर इसलिए बड़ी है कि मैं अपने आपको वश में नहीं कर सकी (उपमा ग्रहण कर ली)।

Nijanand App

हवे मनसा वाचा करमणां करी, हूं नहीं मूकूं निध परहरी।
नैणे निरखूं निरमल चित करी, हूं रुदे राखीस वालो प्रेम धरी।। २४ ।।

अब मन, वचन और कर्म से अपने अखण्ड घर को नहीं छोड़ूंगी अपने चित्त को निर्मल करके देखूंगी और धनी के प्रेम को हृदय में रखूंगी।

करी परणाम लागूं चरणे, सेवा करीस हूं वालपण घणे।
दंडवत करूं जीव ने मन, दऊं प्रदखिणा रात ने दिन।। २५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर प्रणाम करती हैं और कहती हैं, मैं बड़े लाड व प्यार से आपकी सेवा करूंगी। जीव और मन से दण्डवत् करती हूं और रात-दिन आपकी परिक्रमा करती हूं।

कृपा करो छो सहु साथज तणी, वली कृपा साथने करजो घणी घणी।
इंद्रावती चरणे लागे आधार, धणी लिए तेम लीधी सार।। २६ ।।

हे धनी! आप सुन्दरसाथ पर बड़ी कृपा करते हो। आगे भी बारबार अति कृपा करना। इन्द्रावती आपके पांव पड़कर कहती है कि जिस प्रकार पति, पत्नी का ध्यान रखता है, आप उसी तरह हमारा ध्यान रखो।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ २६३ ॥

हवे आपणमां बेठा आधार, रामत देखाडी उघाडी बार।
हवे माया कोटान कोट करे प्रकार, पण आपणने नव मूके निरधार।। १ ।।

अब हमारे बीच में धनी विराजमान हैं और परमधाम के दरवाजे खोलकर खेल दिखा रहे हैं। अब माया करोड़ों प्रयत्न करे तो भी धनी हमें नहीं छोड़ेंगे।

तेडी आपणने जाय घरे, वचन कह्या केम पाछां फरे।
मनना मनोरथ पूरण करे, नेहेचे धणी तेडी जाय घरे।। २ ।।

धनी हमें घर लेकर ही जाएंगे। जो वचन उन्होंने कहे वह उसे पूरा करेंगे। हमारे मन के मनोरथ को निश्चित रूप से पूरा कर के बुलाकर घर ले जाएंगे।

जो हवे आपण ओलखिए आवार, तो जीव घणूं पामे करार।
साथ ऊपर दया अति करी, वली जोगवाई आवी छे फरी।। ३ ।।

इस बार यदि हम धनी की पहचान कर लें तो जीव को बड़ा करार होगा (आनन्द होगा)। सुन्दर साथ के ऊपर धनी ने अति कृपा की है। फिर से सब साधन दे दिए हैं।

वली अवसर आव्यो छे घणो, अने वखत उघड्यो साथज तणो।
आपणे नव मूकवा हीडूं संसार, धणी आपणो विछोडो नव सहे लगार।। ४ ।।

फिर से अवसर हाथ आया है और सुन्दरसाथ के नसीब खुल गए हैं। आप संसार को नहीं छोड़ना चाहते और धनी हमारा बिछोह नहीं सहन करते, अर्थात् धनी हमें नहीं छोड़ सकते।

तारतम पखे विछोडो नहीं, सुपनमां माया जोइए सही।
सुपन विछोडो पण धणी नव सहे, तारतम वचन पाधरा कहे।। ५ ।।

यदि हम जागृत बुद्धि से देखें तो वियोग नहीं है। स्वप्न के अन्दर ही हम माया देख रहे हैं। तारतम ज्ञान से स्पष्ट जानकारी मिलती है कि सपने में भी धनी हमें छोड़ना सहन नहीं करते।

Nijanand App